रात्रि क्लास 10/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

(देहली में मीटिंग में राय निकली है शिवजयंती पर सभी धर्म वालों को बुलाने की....)

अभी देरी है। तुम्हारी बात और है, उन्हों की बात और है। वह तो मिलते रहते हैं। तुम्हारे में वह ताकत चाहिए। अभी वह ताकत नहीं आई है बच्चों में। देसाई ने भी तुमको अकल सिखाया। जैसे और ओपीनिंग करते हैं, रस्सी कटवाते हैं, तुम भी वह करते हो। बाबा हमेशा कहते हैं पहले कोचिंग करो तो फिर नाम बाला हो। वह तो और तुमको सिखलाने वाला निकला कि ऐसा न करो। बाकी इतना समझते हैं कि यह ज्ञान-योग है। तुम ज्ञानी हो तो अज्ञानियों मिसल क्यों करते हो? तुम्हारा जो असल था स्विच खोलकर सामने बाप को देखे। यह बेहद का बाप है जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है। विश्व में शान्ति इनके राज्य में है। दैवी कैरेक्टर्स था। ऐसे-2 समझावें तो असर हो। अभी देही-अभिमानी का वायुमंडल ही नहीं है। अक्सर करके 25% अच्छा बने हैं, बाकी कम। देही-अभिमानीपने से ही बल मिलना है। गरीब निवाज़ दुखी जो हैं वह फिर भी याद करते हैं बाकी तो अपने मौज में रहते हैं। ताकत कम है जो किसको तीर लगे। तुम समझते हो यह बनना बड़ी मुश्किल है।

तो ऐसे बड़े-2 काम करने बाबा छुट्टी नहीं देंगे। बाबा कहते हैं वानप्रस्थ में रहना है। जैसे कि शादी के दिन पुराने कपड़े पहनते हैं; परन्तु बाबा की समझानी को समझते थोड़े ही हैं। बाबा बहुत समझाते हैं गाँधी बहुत साधारण रहता था, मेहतर मिसल। ठण्डी में चादर पड़ी रहती थी। बिल्कुल ही साधारण तो नाम भी उनका होता है ना। विल पावर थी। विल पावर तुम बच्चों में होनी चाहिए। कितनी उनमें फलक थी। यहाँ तो बात मत पूछो। सभी सेन्टर्स में किचड़ पट्टी है। आपस में रूहानी बातें करनी चाहिए। यहाँ तो अक्सर करके शैतानी बातें करते हैं। बहुत सेन्टर्स पर ऐसे होते हैं। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं। एक/दो को सावधान नहीं करते, और ही असावधान करते हैं। रूहानी सर्विस करने वालों की बुद्धि में वही बातें होंगी। सर्विस न है तो बाकी किचड़ पट्टी ही है। बहुत-बहुत रॉयलिटी चाहिए। बहुतों को यह नशा नहीं है हमको बाप पढ़ाते हैं, हम बहुत ऊँच बनने वाले हैं। चलन, वातावरण बहुत रॉयल चाहिए। एक/दो को ऊँच उठाना चाहिए, नीचे न गिराना चाहिए। बहुत अच्छे-2 मीठे बच्चे, जब माया नाक से पकड़ती है तो एकदम गिरा देती है। बड़ी भारी मंज़िल है। बाबा कहते हैं बिल्कुल ही निरअंहकारी रहना है। फकीर लोग क्या पहनते हैं, यहाँ तो बात मत पूछो– बहुत एक/दो को गिराने की राय देते हैं। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।

प्वाइंट्सः- हरेक चीज़ वण्डरफुल है। अभी तुम इस ज्ञान को समझते हो तो वण्डर-वण्डर कहते रहते हो। बाप भी है वण्डरफुल। कैसे बैठ तुमको नॉलेज देते हैं। दुनिया थोड़े ही इन बातों को जानती है। विचार-सागर-मंथन करना, इस बात में रमण करना है। यहाँ कोई पेट को पट्टी नहीं बाँधनी है। एक पहाका भी है ना सवेरे सुमन सवेरे उथन..... दुनिया में कब पैसे की भीड़ न देखे। यहाँ तो गवर्नमेंट कितना पैसे की भीड़ देखती है। तुमको बाप ऐसी नॉलेज देते हैं, तुम्हारा बेड़ा ही पार हो जाता है। ड्रामा अनुसार फिर तुम ही गरीब बनते हो। फिर मैं आकर तुमको साहुकार बनाता हूँ। बाप ही गरीब निवाज है ना।

विराट रूप पर किसको भी समझाना बहुत सहज होता है। बाबा ने दिल्ली वालों को लिखा है पहले से ही उनको समझाओ। टाइम तो दिया है। ताजा-2 माल बुद्धि में होगा तो उनको अच्छी रीत समझा सकेंगे। बुद्धि में होगा तो स्पीच भी कुछ करेगा। तुम्हारा घेराव ही देहली पर है। देहली को परिस्तान भी कहते हैं। बिरला मंदिर में लगा हुआ है 5000 वर्ष पहले दिल्ली परिस्तान थी; परन्तु परिस्तान अक्षर से ही वह समझ नहीं सकते। परिस्तान अर्थात परियों का रहने का स्थान। सुहेनी को परी कहते हैं। नाम ही परिस्तान पड़ जाता है। संगम पर ले जाए समझाना है। यहाँ कितने ढेर मनुष्य, वहाँ कितने थोड़े। बाप मनुष्यों की संख्या घटा देते हैं। कितनी सुख-शांति हो जाती है। ओम।